भारत सरकार

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न सं. 317

02.02.2026 को उत्तर के लिए

अमृत धरोहर कार्यक्रम के अंतर्गत आर्द्रभूमि का संरक्षण और प्रबंधन

317. श्री विश्वेश्वर हेगड़े कागेरीः

श्री मनोज तिवारीः

डॉ. राजेश मिश्राः

श्री अभिमन्यु सेठीः

क्या **पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री यह** बताने की कृपा करेंगे किः

(क) देश भर में आर्द्रभूमियों के संरक्षण, पुनरुद्धार और सतत उपयोग के लिए अमृत धरोहर पहल के उद्देश्य और कार्यक्षेत्र क्या हैं;

(ख) इस पहल के अंतर्गत आर्द्रभूमियों की पहचान, अधिसूचना और प्रबंधन में राज्य सरकारों और स्थानीय समुदायों के साथ समन्वय सहित क्या प्रगति हुई है; और

(ग) आर्द्रभूमि-केन्द्रित कार्यकलापों के माध्यम से जैव विविधता संरक्षण, आजीविका सहायता और जलवायु अनुकूलनशीलता के संदर्भ में क्या परिणाम प्राप्त हुए हैं?

उत्तर

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन राज्य मंत्री
(श्री कीर्तवर्धन सिंह)

(क) पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार की अमृत धरोहर पहल 2023 में रामसर स्थलों के विशिष्ट संरक्षण मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए शुरू की गई थी। इसके प्रमुख घटक प्रजाति और पर्यावास संरक्षण, प्रकृति पर्यटन, आर्द्रभूमि आजीविका और आर्द्रभूमि कार्बन आकलन हैं। इस पहल के अपेक्षित परिणामों में विशिष्ट संरक्षण और सांस्कृतिक विरासत मूल्यों का संरक्षण और संवर्धन, प्रकृति पर्यटन अवसरों का सृजन और स्थानीय समुदायों के लिए आय सृजन, आर्द्रभूमियों के इष्टतम और विवेकपूर्ण उपयोग को बढ़ावा देना, उनके पारिस्थितिक भूमि का संरक्षण तथा जैविक विविधता और कार्बन स्टॉक का संरक्षण और वृद्धि शामिल है।

(ख) और (ग) देश में अमृत धरोहर पहल के तहत की गई प्रगति का विवरण, इसके प्रमुख घटकों के तहत किए गए अध्ययन तथा राज्य सरकारों और स्थानीय समुदायों के साथ समन्वय निम्नानुसार हैं:

(i) **प्रजातियों और पर्यावासों के संरक्षण:** भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण और भारतीय प्राणी सर्वेक्षण द्वारा क्रमशः 75 रामसर स्थलों के वनस्पतियों और जीवों की सूची के लिए अध्ययन किए गए हैं। रामसर स्थलों के लिए लोगों के जैव विविधता रजिस्टर (पीबीआर) तैयार या अद्यतन किए गए हैं। प्रबंधन योजनाओं की प्रभावी निगरानी सुनिश्चित करने के लिए, भारतीय आर्द्रभूमि के लिए प्रबंधन प्रभावशीलता ट्रैकिंग टूल (एमईटीटी) के लिए दिशानिर्देश प्रकाशित किए गए थे और अब तक 65 रामसर स्थलों के लिए एमईटीटी आकलन पूरे किए जा चुके हैं। केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद के सहयोग से स्कूली छात्रों के विभिन्न स्तरों के लिए आर्द्रभूमि पर दस शैक्षिक वीडियो भी तैयार किए गए थे। आर्द्रभूमि के विवेकपूर्ण उपयोग के लिए एक कार्यान्वयन ढांचा जारी किया गया था। भारत के रामसर स्थलों की प्रमुख प्रजातियों की बर्ड कॉल पर वीडियो भी जारी किया गया है।

(ii) **प्रकृति पर्यटन और आर्द्रभूमि आजीविका:** पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने प्रकृति पर्यटन और आर्द्रभूमि आजीविका पर प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए विषय वस्तु का अध्ययन करने और पाठ्यक्रम तैयार करने के लिए पर्यटन मंत्रालय के साथ सहयोग किया। पांच रामसर स्थलों से 196 स्थानीय समुदाय के सदस्यों के लिए वैकल्पिक आजीविका कार्यक्रम और पर्यावरण नाविक प्रमाणन के तहत प्रशिक्षण आयोजित किए गए थे। इसके अलावा, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के हरित कौशल विकास कार्यक्रम के तहत प्रकृति गाइड के लिए एक प्रशिक्षण मॉड्यूल तैयार किया गया था।

(iii) **आर्द्रभूमि कार्बन आकलन:** आर्द्रभूमि में कार्बन स्टॉक के आकलन के लिए एक 'मानक संचालन प्रक्रिया' जारी की गई थी, और इसका उपयोग पूरे देश में 39 रामसर स्थलों के कार्बन-स्टॉक का आकलन करने के लिए किया गया है। आर्द्रभूमि के लिए जलवायु सह-लाभ आकलन के लिए कार्यप्रणाली तैयार की गई है। दलदली भूमि की उच्च कार्बन भंडारण क्षमता को ध्यान में रखते हुए, "भारत की दलदली भूमि: एक अवलोकन और भविष्य की रूपरेखा" पर एक तकनीकी रिपोर्ट जारी की गई है।

*****